© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 05 | April – June 2018

साहित्य, समाज एवं थर्ड जैंडर : दशा और दिशा

डॉ0 नीलम

ईश्वर की रचना का हिस्सा जो नर है न ही नारी वो जिसे हम किन्नर या ट्रांस जेंडर से सम्बोधित करते हैं। दोनों वर्ग अर्थात् स्त्री व पुरूष के गुणों का सामंजस्य है ये वर्ग। इनका पहनावा, वेशभूषा इनकी भिन्नता की पहचान है। हिजड़ा या किन्नरों के अन्दर एक अलग गुण पाया जाता है। इनका रहन–सहन भी समाज में अन्य स्त्री, पुरूषों से अलग होता है। और यह कोई नयी नहीं अपितु बहुत प्राचीन परम्परा का हिस्सा है। परन्तु यह भी सत्य है कि इनके जन्म के कारणों के विषय में आज भी एक मत नहीं है। इनके जन्म से सम्बन्धित माना जाता है। जब कुंडली में शुक्र व शनि हो और उन्हें गुरू और चन्द्र नहीं देखता तो व्यक्ति का जन्म किन्नरों में माना जाता है। वहीं दूसरे मत के अनुसार शास्त्रा में किन्नर का जन्म पूर्व जन्म के गुनाह को बताया जाता है। पौराणिक कथाओं में भी किन्नरों का वर्णन मिलता है। महाभारत में भीष्म की मृत्यु का कारण किन्नर बताया जाता है जिसका नाम शिखंडी था। मुगल शासकों के समय भी किन्नरों के राज दरबार का पता चलता है। चाहें स्त्री या पुरूष की भाँति किन्नर रूपी तीसरे वर्ग का वर्णन चाहे पुराणों से होता आ रहा है परन्तु यह भी सत्य है कि यह वर्ग समाज में सदैव घृणा, व्यंग्य व कष्ट पूर्ण जीवन व्यतीत करता आया है। कई बार अपनी वास्तविक पहचान छुपाता यह वर्ग स्वयं को कभी लड़का तो कभी लड़की बताने के लिए मजबूर है यह मजबूरी भी उन्हें समाज द्वारा दी गई है। न चाहते हुए भी परिवार से उन्हें अलग कर दिया जाता है।

उन्हें अन्य सामान्य बालकों की भांति न तो परवरिश मिलती है और न ही शिक्षा। हाथ फैलाते घृणा के पात्रा बनकर ही ये अपना जीवन यापन करने को मजबूर हो जाते हैं। न केवल समुदाय से बाहर अपितु इनके प्रति डर व अफवाहें भी अत्यधिक मिलती है। लोगों का इनके प्रति नकारात्मक भाव स्वयं को इनसे श्रेष्ठ मानना एवं अलग रखने का है। अस्पष्ट जैंडर एवं यौनिक पहचान ना पाने के कारण इन्हें नागरिक अधिकारों से भी वंचित किया जाता रहा है। इनमें प्रतिभा व बुद्धि का अभाव माने जाना और केवल ताली बजाने के काबिल समझा जाता रहा है। यह विषय निश्चित ही अन्य विषयों से अत्यन्त भिन्न और संवेदनशील है। हमारे समाज में अनेक सामाजिक मुद्दे है परन्तु उनमें तीसरे वर्ग के दर्द का एक मुद्दा अत्यन्त अहम है। हिन्दी साहित्य में भी इस दिशा में कार्य किया जा रहा है। उनमें किन्नरों के जीवन की त्रासदी को व उनके सामाजिक दर्द को अत्यन्त मार्मिकता के साथ उठाया गया है। किन्नर काम करना चाहते

है सामान्य वर्ग जैसा ही जीवन बीताना चाहते है परन्तु हमारा समाज उन्हें आम व्यक्ति से भिन्न दृष्टि से देखता है जिस कारण उनका जीवन नरकीय हो जाता है। परन्तु अब धीरे–धीरे ऐसे विषयों को सामने लाकर उन पर काम किया जा रहा है ताकि ये वर्ग भी आत्म सम्मान का जीवन जी सके। इनमें लेखिका निर्मला भुराड़िया जी भी है जिन्होंने अपने उपन्यास 'गुलाम मंडी' में स्त्रियों के दैहिक शोषण और मानव तस्करी की वैश्विक समस्या को अत्यन्त अलग ढंग से उठाया है। जिसमें किन्नरों की समस्याओं के अनछुए पहलु को उठाया गया है। यह ऐसा विषय है जिस पर खुले मुंह बात करना हमारी सभ्यता से भिन्न माना जाता है। हांलाकि इस मुद्दे पर कानून भी है और अनेक समितियां भी और यहां तक कि बहस तक भी होती रही है परन्तु आज़ादी के इतने वर्षों के बाद भी इनकी हकीकत किसी से छुपाई नहीं जा सकती। 'गुलाम मंडी' इसी जंजीर की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिसे पढ़कर पाठक के अन्दर चिन्तन् का जागरण होता है। जानकी व कल्याणी नायिकाओं के माध्यम से बेशर्म दुनिया की नंगी सच्चाई दिखाई देती है और महत्वपूर्ण हिस्सा 'तीसरा जेंडर' भी जिसने तिरस्कार व अपमान को समाज से जन्मजात के रूप में प्राप्त किया है। इसी समाज में यह उपन्यास उनके लिए विचार व चिन्तन के नए द्वार खोलने वाला है।

हमारी इतनी बड़ी दुनिया का एक बड़ा हिस्सा 'थर्ड जेंडर' संवेदना से अधिक उपहास व तिरस्कार का पात्रा है। यह एक ऐसा ज्वलंत विषय है जिसका आंतरिक दुख शायद कोई नहीं समझ सका है। उनकी यही समस्या मानवाधिकारों के हनन के रूप में सामने आती है। जिन्हें समाज द्वारा सबसे निचले पायदान पर न केवल रखा गया बल्कि राज्य की नीतियों का भी इन पर गहरा प्रभाव रहा। ट्रांसजेंडर की समस्याएं तयशुदा खांचों से भिन्न मानी जाती रही है। लम्बे समय से बहिष्कृत व उपेक्षित यह वर्ग समाज में विषम लैंगिग विभाजन की सत्ता को सामने लाता है। जिस समाज ने उन्हें अपने पूरे समुदाय से भिन्न कर दिया है। मनुष्य होने के अधिकारों से वंचित यह वर्ग भी समुदाय की मुख्य धाराओं में शामिल होने की इच्छा रखता है। जो मानव होने की गरिमा से भिन्न होने के कारण यौनकर्मी के रूप में काम करने की इस मजबूरी से आज़ादी की चाह रखता है। हालांकि अनके असुविधाओं, असमानताओं का सामना करते हुए भी यह वर्ग समाज में आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहा है। जिनमें लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी इसी समुदाय का नाम है।

साहित्य में इसी विषय पर एक अन्य उपन्यास प्रदीप सौरभ जी का तीसरी ताली है। जिसमें समाज को दुआएं देने वाले के वास्तविक दर्द को उकेरा गया है। तीसरे वर्ग को देखकर दूर हट जाना व अपनी पहचान की समस्या का सामना करता ये तीसरा जेंडर हाशिये

पर बसर हो रही जिन्दगी की कहानियों की सच्चाई व्यक्त करता है। साहसी उपन्यास की भांति आज इस विषय पर समाज में कार्य करने की बहुत आवश्यकता है। इसी विषय पर पंकज पचौरी जी कहते है – ''यह उभयलिंगी सामाजिक दुनिया के बीच और बरक्स हिजड़ों, लौंडों, लौंडेबाजों, लेस्बियनों और विकृत–प्रकृति की ऐसी दुनिया है जो हर शहर में मौजूद है और समाज के हाशिये पर जिन्दगी जीती रही है।'' हिजड़ों का समाज, उनकी शादी, विधवा जीवन, मंगलसूत्रा तोड़ने की रस्में, समस्त चित्रा उपन्यास का हिस्सा बने है। जिसमें तीसरे लिंग के रूप से पहचान रखने वालों के जीवन को अत्यन्त करीब से देखा है। अकेलेपन व परिवार के अलगाव के दर्द को बया करता ये उपन्यास उनके जीवन जीने की ललक का परिचय पूरी दुनिया से करवाता है।

साहित्य के इसी प्रयास में श्री लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी जी की पुस्तक 'मैं हिजड़ा.... मैं लक्ष्मी !' में उनकी उन्नति व पहचान को व्याख्यायित किया गया है। भारत नाट्यम में जिनकी अपनी ही पहचान है। उनकी संघर्ष की कहानी उनके किन्नर होने पर उन्हें गर्वांकित करती है। किन्नरों की महामण्डलेश्वर बनी लक्ष्मी जी ने अत्यन्त नाम कमाया है वो एक नायिका व समाज सेविका भी है उनका सम्पूर्ण जीवन किन्नरों को सम्मान व नाम दिलवाने में बीता है। कई आंदोलन व सम्मान दिलवाने की मुहिम भी उन्होंने चलाई। इसी पुस्तक में उन्होंने जीवन के कड़वे संघर्षों को उकेरा है। आज लक्ष्मी जी ने अपने प्रयासों से उज्जैन में 14वें उखाड़े का प्रांरभ भी किया है जिसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, गौ रक्षा एवं कन्या भ्रूण हत्या व बाल विवाह रोकना है। व आज सरकार ने ही उन्हें इस अखाड़े की जमीन दी है। हांलाकि अखाड़ा परिषदों ने इस प्रयास को उखाड़े में शामिल नहीं किया परन्तु समाज में अस्तित्व नाम का संगठन चलाती उनकी संस्था अनेक उपलब्धि हासिल कर चुकी है।

इसी के प्रयास के परिणामस्वरूप आज कानून व सरकार द्वारा इन्हें उभारने के प्रयत्नरत वोट का अधिकार, पढ़ने का अधिकार और 2011 की जनगणना में इनकी गिनती अलग करवाई गई है। वैश्विक स्तर पर आतंकवाद से लेकर ग्लोबल वार्मिंग तक की चर्चाएं की जाती है परन्तु ऐसे विषयों के साथ ही ऐसे विषयों पर भी चर्चाएं होनी अत्यन्त जरूरी है। हांलाकि कानून ने इस वर्ग को बराबरी का हक तो दे दिया है परन्तु इस विषय पर अधिक विचार व चिन्तन की आवश्यकता है। इस वर्ग ने स्वयं अपने लिए पहल की है। साहित्य में इस वर्ग को लेकर अभी ओर कार्य की आवश्यकता है। हमें ये समझना होगा कि प्रकृति द्वारा तय शुदा जेंडर में इस वर्ग का दोष नहीं दूसरों को दुआएँ देता ये वर्ग भी अन्य इंसानों की भांति ही मानवीय गरिमा का हकदार है। आजीविका, अकेलापन इनके जीवन का अभिन्न हिस्सा

बनकर रह जाता है। अतः इसी अलगाव में छुपी जीने की चाह के सत्य को नई दिशा व दृष्टि की आवश्यकता है। जिसमें तमन्ना व सड़क जैसी फिल्मों का प्रयास भी सराहनिय है। पृथिका देश की पहली ट्रांसजेडर सब इंस्पेक्टर नियुक्त हुई है। जो सरकार द्वारा किये गए नौकरी में बराबरी के हकदार का ही परिणाम है। अब थर्ड जेंडर बच्चों के मुफ्त दाखिले की पहल भी जारी है। इसी प्रयास के साथ वह दिन दूर नहीं जब प्रत्येक व्यक्ति इन्हें सम्मान भरे नेत्राों से सामान्य व्यक्ति का जीवन व्यतीत करते देखेगा। दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के आवेदन में ट्रांसजेंडर को शामिल करने के लिए जरूरी कदम उठाने का निर्देश भी सरकार द्वारा दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने भी नौकरियों में किन्नरों को जगह देते हुए इन्हें तीसरा जेंडर माना है। इग्नू विश्वविद्यालय द्वारा थर्ड जेंडर को भी स्कालर बनाने के निर्णय लेकर इस वर्ग में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने का प्रयत्न किया है। अब इनके अधिकारों की रक्षा के लिए इन्हें भारतीय रेलवे और आई आर सीटीसी ने टिकट आरक्षण और टिकट रद कराने वाले पपत्रा में ट्रांसजेंडर को थर्ड जेंडर के तौर पर शामिल किया है। ऐसे फैसलों द्वारा इन लोगों के लिए उम्मीद के नए आयाम खुले हैं। हांलाकि इनका उत्पीड़न भी लम्बे समय से रहा है। अब भविष्य में ट्रांसजेंडर को थर्ड जेंडर के तौर पर शामिल किया है। ऐसे फैसलों द्वारा इन लोगों के लिए उम्मीद के नए आयाम खुले है। हांलाकि इनका उत्पीड़न लम्बे समय से रहा है। परन्तु अब भविष्य में ट्रांसजेंडर भी अपनी पहचान व सम्मान पूर्वक जिन्दगी जी पाएंगे हिन्दी साहित्य के क्षेत्रा में भी इस विषय पर काम हुआ है परन्तु बहुत कम अतः यह आवश्यक है कि इस दिशा में ओर कार्य हो और इन्हें भी अपनी नयी पहचान की अनुभूति हो व एक सामान्य जीवन जी सके।

संदर्भ सूची

तीसरी ताली : प्रदीप सौरभ वाणी पब्लिकेशन। 21.। ए दरियागंज न्यू दिल्ली

गुलाम मंडी : निर्मला भुराडिया सामयिक प्रकाशन 32ध्3ए कलब रोड़, पश्चिमपूरी, दिल्ली

मै हिजड़ा, मै लथमी : लक्ष्मी नारायण त्रिापाठी वाणी प्रकाशन, 21.।ए दरियागंज न्यू दिल्ली

दैनिक भास्कर (अखबार) : 14 अप्रैल, 2012

अमर उजाला : 27 नवम्बर, 2016

अमर उजाला : 30 जून, 2017